

मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम—व्यंजना

बलदेव राम

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, मेड़ता सिटी

भक्तिकाल के निर्गुणोपासक भक्तों की एक अन्य शाखा सूफी कवियों की मानी जाती है। उस काल में हिन्दू-मुसलमानों में परस्पर मेल-मिलाप और धार्मिक उदारता का प्रसार हो रहा था जिसके कारण एक ओर संतकवि तथा दूसरी तरफ सूफी कवि इस कार्य में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे। हिन्दी-साहित्य में यह सूफी काव्य-परम्परा ईरान से चलकर आयी थी। सूफी-साधना भारतीय अद्वैतवाद से प्रभावित हुई जिसके परिणाम स्वरूप इनके साहित्य में आत्मा-परमात्मा की एकता देखने को मिलती है। सूफी ईश्वर को सौन्दर्य-ज्योति का प्रतीक मानकर प्रेम के माध्यम से उसे प्राप्त करने पर बल देते हैं। भारत में रहस्यवाद ज्ञान के क्षेत्र की वस्तु था, परन्तु सूफियों के प्रेम तत्व का रसायन पाकर वह भावात्मक रहस्यवाद के रूप में विकसित हुआ। इसी कारण आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि ज्ञान के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है वही भावना क्षेत्र में रहस्यवाद है। सूफी-संतों के द्वारा प्रचारित प्रेम-साधना से पूर्व भारत के वैष्णव-आचार्यों ने मधुरा भक्ति के अन्तर्गत दाम्पत्य प्रेम के आध्यात्मिक रूप की प्रतिष्ठा कर दी फलस्वरूप सूफी संतों को दाम्पत्य-प्रेम की आध्यात्मिकता की पवित्र-भावना अपने इश्क हकीकी (पारलौकिक प्रेम) के अनुकूल प्रतीत हुई। इस प्रकार वे इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) द्वारा इश्क हकीकी को प्राप्त करके परम तत्व (खुदा) से एकाकार होने की भावना प्रकट करने लगे। इसी दशा को फना कहा जाता है।

इशरते कतरा है, दरिया फना हो जाना।

दर्द का हृद से गुजर जाना है, हृद से गुजर जाना।

आचार्य शुक्ल ने सूफी-कवियों की प्रेम-गाथाओं को उच्च साहित्यिक कोटि की रचनाएँ स्वीकारते हुए लिखा है कि इस शाखा के सब कवियों ने कल्पित कहानियों द्वारा प्रेम-मार्ग का महत्व दिखाया है। इन साधक कवियों ने कल्पित प्रेम-कहानियों द्वारा लौकिक प्रेम के बहाने उस प्रेम-तत्व का आभास दिया है जो प्रियतम ईश्वर से मिलाने वाला है। इन प्रेम-कहानियों का विषय तो वही साधारण होता है अर्थात् किसी राजकुमारी के अलौकिक सौन्दर्य की बात सुनकर किसी राजकुमार का उसके प्रेम में पागल होना और घर-बार छोड़कर निकल पड़ना तथा अनेक कष्ट और आपत्तियाँ झेलकर अंत में उस राजकुमारी को प्राप्त करना। पर इन कहानियों में प्रेम की पीर की जो व्यंजना होती है वह ऐसे विश्वव्यापक रूप में होती है कि वह प्रेम इस लोक से परे दिखाई पड़ता है।

सूफी-कवियों ने प्रेम के माध्यम से ईश्वर-प्राप्ति का प्रतिपादन जिस रूप में किया, वह भारतीय दर्शन के अनुकूल था। फलस्वरूप भारतीय जनता ने उनकी रचनाओं को सहर्ष स्वीकार किया। सूफी कवियों ने खुदा में, शिव में, विराटमूर्ति में, समस्त सृष्टि में सर्वत्र एक ही नूर के दर्शन बताकर अलौकिक सौन्दर्य-प्रेमभावना का परिचय दिया है।

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में प्रेम की पीर के जिस मूल तत्व को लेकर, जिस प्रेमाश्रयी या सूफी प्रेममार्गी काव्य धारा का प्रणयन किया, मलिक मुहम्मद जायसी इस धारा के प्रमुख और प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जायसी बहुत ही कुरूप थे। वे एक कान से बहरे, एक आंख से काने, रोग से विकृत अंगो वाले और जन्मतः कुरूप थे, परन्तु उनका मन अधिक सरस और सौन्दर्य प्रेमी था।

सूफी काव्यधारा में जीवात्मा और परमात्मा में भेद न मानते हुए भी समस्त सृष्टि और प्रकृति को परमात्मा की प्राप्ति का साधन माना जाता है। इसलिए सूफी साधक परमात्मा को परम प्रियतम मानकर स्वयं को उसके प्रेम में व्यथित मानते हैं। जायसी ने भी अपने काव्य में परमात्मा प्रियतम की प्राप्ति के लिए उत्कंठा व्यक्त की है और उसके विरह में व्यथा वेदना प्रकट करते हुए प्रकृति को भी विरह-व्यथित चित्रित किया है। इस प्रकार उनके काव्य में आद्यन्त सूफी प्रेम-व्यंजना का ही चित्रण हुआ है।

जायसी ने अपनी रचना में लौकिक प्रेम का चित्रण मसनवी शैली में किया है। राजा रत्नसेन तोते के मुख से पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का वर्णन सुनते ही उससे प्रेम करने लगता है और विरह-व्यथा से पीड़ित रहने लगता है। उधर पद्मावती की भी यही दशा रहती है। रत्नसेन अनेक बाधाओं के बाद पद्मावती को प्राप्त करता है परन्तु इधर रानी नागमती अगाध विरह-सागर में डूब जाती है। सिंहलगढ़ से लौटते समय रत्नसेन के जहाज को एक राक्षस नष्ट कर देता है। जिसके कारण दोनों का बिछोह हो जाता है। फिर बड़ी कठिनाई के बाद दोनों का पुनर्मिलन होता है। चित्तौड़ आने पर रूप लोभी अलाउद्दीन आक्रमण करता है। रत्नसेन बन्दी बनाया जाता है। तब पद्मावती विरह-व्यथा से अत्यधिक उन्मत्त रहती है। अंत में गोरा-बाद के बुद्धि-कौशल से रत्नसेन मुक्त होता है। परन्तु देवपाल से युद्ध करते हुए रत्नसेन की मृत्यु हो जाती है। और दोनों रानियाँ उसके शव के साथ सती हो जाती हैं। इस प्रकार पद्मावत में दोनों की विरह-व्यथा को केन्द्र में रखकर लौकिक-प्रेम का उदान्त चित्रण किया है।

जायसी ने पद्मावत में लौकिक प्रेम के साथ-साथ अलौकिक (आध्यात्मिक प्रेम) की व्यंजना की है। शुक्ल के अनुसार-इनका प्रेम वर्णन लौकिक पक्ष से अलौकिक पक्ष की ओर संकेत करता जान पड़ता है। इसी कारण कहीं-कहीं इनके प्रेम की गम्भीरता और व्यापकता, अनन्तता की ओर अग्रसर दिखाई पड़ती है। क्या संयोग, क्या, वियोग दोनों में कवि प्रेम के उस आध्यात्मिक स्वरूप का आभास देने लगता है, जगत् के समस्त व्यापार जिसकी छाया से प्रतीत होते हैं।

जायसी की प्रेम व्यंजना में रूपक और अन्योक्ति योजना भी देखने को मिलती है।

अपने गन्ध के अंत में अन्योक्ति के द्वारा कथानक का रूपक उपस्थित किया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा रत्नसेन और पद्मावती की प्रणय-कथा साधारण मानवीय प्रेम कथा न होकर आत्मा और परमात्मा की प्रणय -कथा है। इसमें रत्नसेन जीवात्मा और पद्मावती परमात्मा है पद्मावती को प्राप्त करने के लिए रत्नसेन को जिन बाधाओं से गुजरना पड़ा उनसे सूफी साधक को गुजरना पड़ता है सूफी-साधना में सृष्टि और प्रकृति के कण-कण में ब्रह्मा के अपरिमित सौन्दर्य का दर्शन किया गया है। इस जीवन और जगत का सौन्दर्य उस परमात्मा का ही सौन्दर्य है।

जायसी ने अपनी आध्यात्मिक चेतना के अनुसार पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का चित्रण करते हुए परमात्मा के अपरिमित सौन्दर्य का व्यापक, गम्भीर, मनोरम एवं चमत्कारी चित्रण किया है। यह सौन्दर्य चित्रण वर्णनात्मक एवं भावात्मक दोनों रूपों में मिलता है। जीवात्मा रूप रत्नसेन उस अपरिमित सौन्दर्य की ओर आकृष्ट होता है। जायसी ने सृष्टि के प्रत्येक तत्व को सौन्दर्य एवं माधुर्य से मण्डित करके यह दर्शाया है कि वे सब तत्व उस अनन्त सौन्दर्य के समागमन की अभिलाषा से ही, उसके पास पहुँचने की आशा से ही सौन्दर्य एवं माधुर्य धारण करते हैं।

पुहुप सुगंध करहिं एहि आसा। मकु हिरकाई तेइ इन्ह पासा।।

जायसी ने लौकिक प्रेम और प्राकृतिक सौन्दर्य के माध्यम से आध्यात्मिक सत्य का चित्रण किया है।

ऐ रानी मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।।

नैहर से तात्पर्य संसार से है इससे आध्यात्मिक अर्थ की ओर संदेश है।

जायसी ने वाच्यार्थ रूप में पद्मावती और रत्नसेन की प्रेम-कथा का चित्रण किया है। परन्तु बीच-बीच में व्यंग्यार्थ रूप में भगवत-प्रेम की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

साधना-पथ का चित्रण करते हुए जायसी ने रत्नसेन को प्रेम-मार्ग का पथिक चित्रित किया है। आध्यात्मिक रूप में वह साधक है। काम, क्रोध, माया, शैतान आदि उसके मार्ग में बाधक हैं। जायसी ने राघव चेतन, अलाउद्दीन, राक्षस तथा तूफान की घटना से बाधक तत्वों की ओर संकेत किया है।

सार रूप में यही कहा जा सकता है कि जायसी ने पद्मावती में जिस लौकिक प्रेम का चित्रण किया है, वह उनके आध्यात्मिक विचारों को प्रकट करने का एक माध्यम रहा है। प्रेम-कथा के बीच-बीच में अनेक स्थानों पर संसार की नश्वरता, शरीर को क्षण भंगुरता, साधना की जटिलता तथा ईश्वर-प्रेम की सर्वश्रेष्ठता की ओर संकेत किया है। जायसी की प्रेम-व्यंजना अतीव भावपूर्ण, मनोरम तथा हृदयगत वेदना से सम्पूरित दिखाई देती है। जायसी का पद्मावती इस दृष्टि से भारतीय प्रेमाख्यानक काव्यों की परम्परा में कालजयी कीर्ति स्तम्भ है।

सन्दर्भ

- 01.जायसी ग्रन्थावली:आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- 02.सूफी कवि जायसी का प्रेम निरूपण:डॉ.निजामुद्दीन अंसारी
- 03.जायसी:रामचन्द्र शुक्ल